SHRI MUKUNDA MANDAL: I raised this question about six or seven months back in the Second Session and I requested the Minister to take up the construction of these very railway lines because of the backwardness of the area. The Minister assured during that time that he will look into the matter favourably. But since then the action has not yet been taken. So, I want to know from the Minister how much time will he take to complete the paraphernalia and when will the construction actually begin?

PROF. MADHU DANDAVATE: This is exactly the same question already put by an hon. Member. Therefore, the reply would be the same. It cannot be a different reply to another member.

श्री शरद यादव : अध्यक्ष महोदय, मैं चाहता हूं कि जो नयी रेल लाइनों का डेवलपमेंट हो रहा है उसकी तहत ज लपुर से गोंडिया छोटी लाइन जो है उस का भी बहुत दिनों से माग चली आ रही है ।

MR. SPEAKER: This is a different question.

श्री शरद यादव : मंत्री महोदय को यह मालूम है । यह डेवलपमेंट का मामला है, नयी लाइन का मामला है इसलिए मैं चाहता हूं इस मामले में भी वे कुछ कहें ।

MR. SPEAKER: Then the Railways in the whole of India will be covered.

SHRI DINEN BHATTACHARYA: My question is very simple. When the survey work was taken up, it is clear that the Railway Minister got the sanction of the West Bengal Government also. After the completion of the survey, after spending, as given in the statement Rs. 8 crores, how is it that this is being delayed and excuse is being taken that the West Bengal Government has not given its sanction? So, the construction of the line is being delayed. My question is a very simple question. Once you take the permission and sanction of the State Government why are you delaying in the matter? What is the policy of the Government in this respect?

PROF. MADHU DANDAVATE: To a simple question my answer is also very simple. It is the usual formality for years together that whenever we undertake any survey at the instance of the State Government we refer the matter back to them and it is not at all any delaying process. And on this survey we have not spent Rs. 8 crores. What I have mentioned as Rs 8 crores is the cost of the project Actually what we have spent on the survey is Rs. 6.96 lakhs. I can assure him that immediately we get the comments of the West Bengal Government we will take proper decision in the matter.

Drilling in Jaisalmer

+

*391. SHRI NATHU SINGH:

SHRI S. S. SOMANI:

Will the Minister of PETROLEUM AND CHEMICALS AND FERTILIZERS be pleased to state:

(a) when drilling for oil was started in Jaisalmer district in Rajasthan;

(b) the progress made in this regard so far and the amount of expenditure incurred thereon;

(c) whether the Central Government have decided to stop oil drilling there; and

(d) if so, the reasons therefor?

THE MINISTER OF PETROLEUM AND CHEMICALS AND FERTILIZERS (SHRI H. N. BAHUGUNA): (a) to (d). A statement is laid on the Table of the Sabha.

Statement

(a) to (d). Exploratory drilling was commenced by the ONGC in the Jaisalmer District of Rajasthan on 7-12-1964 and so far 16 exploratory wells have been drilled in that district. An amount of Rs. 10.52 crores has been spent on drilling operations there. Except for 5 wells (4 at Manhera Tibba and one at Bhuana), the other 11 wells proved to be dry. The small quantity of gas discovered at Manhera Tibba does not admit of commercial utilisation in view of its high nitrogen content. The gas show obtained in Bhuana was non-commercial in quantity and unfavourable in composition.

In view of the results obtained so far, ONGC has suspended drilling operations with a view to acquiring additional data through further geological and geophysical surveys. The resumption of drilling would depend on the results of such additional geological and geophysical surveys

श्री नाथू सिंह : अध्यक्ष महोदय, जैसा कि स्टेटमेंट में कहा गया— ओ०एन० जी०सी० द्वारा राजस्थान के जैसलमेर जिले में 7-12-1964 को तेल की खुदाई का कार्य आरम्भ किया गया था—उस के बाद अब तक 16 कूए खोदे गये, उन में से 11 कूए—जैसा इन्होंने बताया है—सूखे पाये गये और 5 कूओं में वहां पर गैस और तेल की मात्रा निकली है । इन कूओं में गैस और तेल की मात्रा निकलने के बाद भी वहां अचानक कार्य बन्द कर दिया गया । इस के बाद राजस्थान सरकार ने केन्द्र को पत्र लिखा, जिस में उन्होंने निवेदन किया है कि वहां पर तेल निकलने की भारी सम्भावना है । इस लिए खुदाई पुनः प्रारम्भ कराई जाय और पूरे जिले का सर्वेक्षण कराया जाय ।

मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं— जैसा उन्होंने बताया है कि इस कार्य पर अब तक 10.52 करोड़ रुपया खर्च किए जा चुके है और इतने बड़े कार्य को अचानक बन्द कर दिया गया—क्या राजस्थान सरकार का इस सम्बन्ध में आप को कोई पत्र मिला है तथा उस में उन्होंने आप से क्या निवेदन किया है ? क्या आप उन के पत्र पर विचार कर के जैसलमेर जिले में पुनः खुदाई का काम जल्द प्रारम्भ कर देंगे ?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा : मान्यवर, राजस्थान के जैसलमेर जिले में तेल की सम्भावना पाई गई थी और उस के लिये हमारे जियोलाजिकल फील्ड-वर्क करने वाले, जियोफिजिकल फील्ड वर्क करने वाले और सीसमिक-मेगनेटिक सर्वे करने वाली पार्टीज ने पिछले सालों में काम किया किया । जैसलमेर के अतिरिक्त हम ने राजस्थान के एक और जिले में भी काम किया—बीकानेर के नागौर में भी कुए खोदे गये, उस में भी गैस की जो सम्भावना अब तक मिली है, उस को अगर हम अपने बम्बई के बेसिन फील्ड की तरह से निकालना शुरू करें तो यह गैस कुल चार दिन की है, चार दिन में गैस खत्म हो जायगी । अभी हम ने इस को छोड़ा नहीं है, राजस्थान सरकार से भी निवेदन किया है और अपने नौजवान सभी सदस्यों से भी प्रार्थना करना चाहता हूं—कि इसे छोड़ा नहीं है और इस पर हम लोग लगे हुए है लेकिन अभी हमारा उस पर ड्रिलिंग करने खोदते जाने का कोई इरादा नहीं है क्योंकि खुदाई में खासा रुपया लगता है, करीब 10 लाख रुपया लग जाता है । बजाए उस के, अपने जो सर्वेज है जयोलाजीकल और जियो-फिजिकल, उन के आधार पर और हमारे जो भूगर्भ शास्त्री है, भूविज्ञान शास्त्री है, उन से हम कह रहे है कि अपनी खोज नीव करो और यह समझो कि किस स्तर पर कहां सूराख करने से हम सही जगह पर पहुंचेंगे । इसलिए ड्रिलिंग

पार्टी के सिर्फ 120 आदमियों की टीम को वापस किया गया है और वह कहीं और ड्रिलिंग कर रहे हैं।

श्री बसन्त साठे राजस्थान में सुराख करना मुश्किल है और वहां से तेल निकालना आसान नहीं है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा : तेल वहीं निकलता है जहां आप मुश्किल समझते हैं।

श्री बसन्त साठे : सुराख करते रहो लेकिन तेल निकलेगा नहीं राजस्थान में।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा : मान्यवर, सब सुराख हुए हैं लेकिन जब साठे जी पहले इस तरफ थे तो तेल नहीं निकला और जब यह दल उस तरफ है तो तेल निकलेगा।

मान्यवर, मैं यह कह रहा था कि हम ने काम त्यागा नहीं है। मैं राजस्थान के सारे भाइयों में और जैसलमेर वालों से कहता हूं कि भारत का भविष्य उस क्षेत्र से जुड़ा हुआ है, भला हम उसको कैसे छोड़ सकते हैं।

श्री नाथू सिंह : मैं माननीय मंत्री जी को उन के उत्तर के लिए बधाई देना चाहता हूं। सब से पिछड़ा हुआ प्रदेश हमारे राजस्थान का है और उस राजस्थान प्रदेश में भी सब से पिछड़ा हुआ जिला जैसलमेर का है जो कि बार्डर पर है और जहां पर आबादी का घनत्व भी बहुत कम है। पहले जो सर्वेक्षण किया गया था उस में भारी तेल और गैस निकलने की सम्भावना बताई गई थी। साठे साहब की पार्टी के दिनों में तेल न [illegible] लेकिन राजस्थान में जैसलमेर जिले पर अगर आप ध्यान देंगे, तो वहां पर आप को तेल मिलेगा। वहां पर वैज्ञानिकों ने यह खोज की थी और बताया था कि यहां पर तेल निकलने की बड़ी भारी सम्भावना है। तो मैं मंत्री जी से यह पूछना चाहूंगा कि क्या आप ने उस पूरे जिले में और उस के आस पास, जैसा आप ने बीकानेर और नागौर के बारे में बताया है कि वहां पर तेल निकलने की सम्भावना है, काफी दूर तक जो क्षेत्र सैकड़ों किलोमीटर तक फैसला हुआ है, में तेल निकालने के बारे में खोज करवाई गई है? अगर वहां पर तेल निकल आता है तो जैसलमेर और रेगिस्तान का जो पूरा इलाका है, उस का विकास हो सकता है और उससे पूरे देश को फायदा हो सकता है। तो मैं यह जानना चाहूंगा कि कब तक आप एक स्पेशल दल भेज कर वहां का सर्वेक्षण कराएंगे ताकि यह पता लग सके कि वहां पर तेल निकलने की सम्भावनाएं हैं या नहीं? क्या इस की ओर जांच करवायेंगे और इस तरह के कार्य में और तीव्रता लाएंगे, यह मैं जानना चाहता हूं।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा : मान्यवर, हमारी जो टीम है वह इस काम को देख रही है कि किन स्थानों पर सुराख करें जहां से तेल निकल सकता है। मैं यह भी बता दूं कि पाकिस्तान की तरफ भारी रेगिस्तान है और हमारी तरफ जैसलमेर है। भूगर्भ शास्त्रियों ने इस का नाम मारी-जैसलमेर-आर्च रखा है। इस आर्च के अन्दर ही देखना है और सब जगहें जाने की बात नहीं है। उस का पूरा सर्वेक्षण करवाने की व्यवस्था है। वहां पर टीम मौजूद है और काम जारी है। सिर्फ ड्रिलिंग का काम बन्द हुआ है, बाकी सब काम जारी है, और वह जारी रहेगा। उस के बाद अगर ड्रिलिंग की आवश्यकता पड़ेगी, तो वह काम भी शुरू किया जाएगा।

श्री एस० एस० सोमानी : अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी ने जवाब दिया है और उस में

यह बताया है कि सन् 1964 से यह काम प्रारंभ हुआ है। मेरा निवेदन यह है कि गत 4-3-1975 को अनस्टार्ड क्वेश्चन नं० 2029 के उत्तर मे यह बताया गया था कि यह काम सन् 1956 मे चालू हुआ था। मैं मंत्री जी से यह पूछना चाहता हू कि क्या इन आठ वर्षों का रिकार्ड आपके पास है या नही?

दूसरे हम ने यह पूछा था कि तेल की क्या पोजीशन है? आप गैस के बारे मे बता रहे हैं। मैं यह पूछना चाहता हू कि क्या जैसलमेर जिले मे तेल उपलब्ध है या नही? क्या पाच कुओं मे तेल मिला या नही मिला? यदि मिला है तो वह किस उपयोग के लिए है? यह बताने की कृपा करे?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा सन् 75 मे क्या जवाब दिया गया था, उस की जानकारी इस समय मेरे पास नही है। जैसा माननीय सदस्य ने अभी बताया, मै देख कर के उन्हे पत्र द्वारा सूचित कर दूगा और अगर अध्यक्ष महोदय चाहेगे तो जानकारी सभा पटल पर भी रख दूगा।

श्री एस० एस० सौमानी इस प्रश्न के उत्तर मे 1956 लिखा हुआ है।

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा क्या वह बिकानेर के बारे मे है, या जैसलमेर और बिकानेर दोनो को जोड कर 56 लिखा हुआ है, यह मुझे देखना पडेगा।

जहा तक तेल मिलने का सम्बन्ध है, तेल वहा इतनी कम मात्रा मे पाया गया है जिसका कोई अर्थ नही है। इसीलिये हम सर्वेक्षण करा रहे है और वैज्ञानिको से तेल की सभावनाओं का पता लगाने के बारे में कह रहे है। वहा गैस की सभावना का तो पता लगा है क्योकि पाकिस्तान के मारी क्षेत्र मे गैस बहुत निकली है और चूकि कवरत किसी राजनीतिक सम्बन्ध को नहीं मानती है इसी लिए वहा गैस की सम्भावना है।

श्री राममूर्ति अभी माननीय मंत्री जी ने बताया कि वहां गैस थोड़ी मिकदार में निकली है जो कि चार दिन तक चल सकती है। मैं यह जानना चाहता हू कि इस चार दिन की सम्भावना का अन्दाजा लगने के बाद क्या इस काम को बढ़ाया जाएगा या यही राक दिया जाएगा, क्या इस पर जो रुपया खर्च किया गया है वह व्यर्थ जाएगा?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा अब तक जो रुपया लगा है वह तो खोज का रुपया लगा है। तेल निकालने के लिए जो ससाधन लगाने होगे वे तो दस करोड रुपये से ऊपर होगे। अगर कही गैस निकले और चार दिन मे गायब हो जाये तो उस गैस के कोई मायने नही हैं।

श्री ईश्वर चौधरी मंत्री जी ने अभी बताया है कि राजस्थान मे कार्य प्रारभ किया गया है। मै जानना चाहता हू कि राजस्थान की तरह क्या अन्य प्रदेशों मे भी आप की टीम सर्वे का कार्य कर रही है, तेल के बारे मे कोई जाच-पडताल कर रही है? यदि हा तो वे कौन-कौन से प्रदेश है?

श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा जी, हा। वैसे यह प्रश्न इस प्रश्न से सबधित नही है। फिर भी मै उन की जानकारी के लिये बताना चाहता हू कि असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड का बार्डर, त्रिपुरा, वैस्ट बगाल अण्डमान निकोबार, उडीसा मे महानदी का क्षेत्र गुजरात, उत्तर प्रदेश, आध्र प्रदेश, दक्षिण मे कावेरी के किनारे, केरल, पजाब, जम्मू कश्मीर और हिमाचल प्रदेश मे यह कार्य हो रहा है। बदकिस्मती से बिहार मे कही पर भी यह कार्य नही हो रहा है।